महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय) *(A*
Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत नाटक 'द स्लेव' को कलासागर पुरस्कार

नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के छात्रों की नागपुर में प्रस्तुति

वर्धा, दि. 10 अक्टूबर 2012: महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के छात्रों द्वारा प्रस्तुत 'द स्लेव - कहानी एक गुलाम की' नाटक को कलासागर सम्मान से पुरस्कृत किया गया। नागपुर के कलासागर कला प्रतिष्ठान तथा विदर्भ हिंदी सम्मेलन द्वारा आयोजित सातवे हिंदी नाटक समारोह में 'द स्लेव' नाटक का मंचन किया गया। इस प्रतियोगिता में प्रस्तुति, निर्देशन तथा पुरूष अभिनय का द्वितीय पुरस्कार इस नाटक ने प्राप्त किया। तीनों पुरस्कार 'कलासागर सम्मान' के रूप में वितरित किये गये।

'द स्लेव-कहानी एक गुलाम की' नाटक अमरिका के प्रख्यात कवि तथा नाटककार लिरोई जोन्स ने लिखा है। जिसका मराठी अनुवाद प्रथम विश्व मराठी साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष विख्यात दलित लेखक, चिंतन डॉ. गंगाधर पानतावने द्वारा किया गया। इस नाटक का हिंदी अनुवाद, सम्पादन, पुनर्लेखन तथा निर्देशन नाटयकला एवं फिल्म् अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. सतीश पावडे ने किया है। नाटक का निर्माण विभागाध्यक्ष प्रो. सुरेश शर्मा द्वारा किया।

इस नाटक में वाकर वेसल्स की भूमिका आशुतोष चंदन ने निभायी। जिसके लिए उन्हें सर्वश्रेष्ठ अभिनय का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ। प्रो.ब्राड की भूमिका धर्मप्रकाश 'मन्टो' तथा मिसेस ग्रेस की भूमिका रश्मि पटेल ने अदा की। संगीत निर्देशन अखिलेश दीक्षित ने किया। प्रकाश योजना तथा परिसंचालन नीरज उपाध्याय, रूपसज्जा मनीष कुमार, वस्त्रसज्जा सुनीता थापा की थी। रंगसज्जा तथा मंचविन्यास गौरव मिश्रा, चैतन्य आठल्ये, अभिषेक कुमार का था। सह निर्देशन रवि मुंढे ने किया।

अमरिका में गत चार सौ सालों से चले आ रहे नस्लभेद की समस्या पर यह नाटक आधारित था। इस नाटक के माध्यम से निग्रों का नस्लभेद के विरोध में चल रहे आंदोलन, उसके अंर्तद्वंद्व, उदारतावादी श्वेतों की खोखली नीति को उजागर किया गया है। प्रेम, प्रेम का त्रिकोण, आदत की गुलामी, नीग्रो का मुक्तियुद्ध, काले-गोरों की नस्ल से जन्मे नई 'म्युलैटो' पीढी के प्रश्न इस नाटक में प्रस्तुत किये गये हैं। यह एक वैचारिक तथा गहन गंभीर नाटक है, जो भारतीय परिप्रेक्ष्य में दलित-सवर्ण संघर्ष को भी उजागर करता है।

कलासागर विदर्भ स्तरीय हिंदी नाटक समारोह में यह नाटय प्रस्तुति काफी चर्चित रही। नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग के 'लेबोरेटरी थिएटर' की परिकल्पना के तहत डॉ. सतीश पावडे ने इस नाटक का 'रंग विन्यासन' किया। 'कलागौरव सम्मान' से विदर्भ हिंदी साहित्य सम्मेलन तथा कलासागर कला प्रतिष्ठान ने इस नाटक को तथा नाट्यकला एवं फिल्म अध्ययन विभाग सहित निर्देशक डॉ. सतीश पावडे को सम्मानित किया।

पुरस्कार वितरण समारोह में नागपुर के विधायक तथा चित्रकार दिनानाथ पडोले, भारत सरकार के गीत एवं नाटक विभाग के निर्देशक डॉ. निलकांत कुलसंगे, डॉ. ओम प्रकाश मिश्रा, कलासागर के संस्थापक उमेशबाबू चौबे, कार्याध्यक्ष रवि शंकर दीक्षित, रंगकर्मी डॉ. किशोर कुलकर्णी, शाम धर्माधिकारी, कलाधर रानडे, राकेश खाडे, सलीम शेख, कलासागर के पदम नायर, प्रकाश जाधव, रिता धनवटे, सर्जेराव गलपट सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

बी एस मिरगे
जनसंपर्क अधिकारी